ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
भारत मौसम विज्ञान विभाग
चंद्रशेखर आज़ाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्विद्यालय
कानपूर, उत्तर प्रदेश

मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 30-12-2025

इटावा(उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन :2025-12-30 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	2025-12-31	2026-01-01	2026-01-02	2026-01-03	2026-01-04
वर्षा (मिमी)	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
अधिकतम तापमान(से.)	15.0	16.0	17.0	15.0	15.0
न्यूनतम तापमान(से.)	7.0	8.0	10.0	10.0	9.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	97	93	91	91	93
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	68	67	61	65	64
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6	2	6	7	1
पवन दिशा (डिग्री)	285	252	118	336	360
क्लाउड कवर (ओक्टा)	0	0	0	0	0
चेतावनी	कोहरा	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं	कोई चेतावनी नहीं

पूर्वानुमान सारांश:

भारतीय मौसम विभाग के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, अगले पांच दिनों तक आसमान साफ रहने के कारण बारिश की कोई संभावना नहीं है, वातावरण में मध्यम से घना कोहरा रहेगा और सुबह और रात में शीतलहर चलने की संभावना है। अधिकतम तापमान 15.0-17.0°C के बीच रहेगा, जो सामान्य से 3-4°C कम रहने की संभावना है और न्यूनतम तापमान 7.0-10.0°C के बीच रहेगा, जो सामान्य से 1-2°C अधिक रहने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता की अधिकतम और न्यूनतम सीमा 91-97 और 61-68% के बीच रहेगी। हवा की दिशा उत्तर-पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व से होगी और हवा की गति 1.0-7.0 किमी/घंटा के बीच रहेगी, जो सामान्य से 2-3 किमी/घंटा अधिक रहने की उम्मीद है।

मौसम चेतावनियाँ (अगले दिन के 08:30 IST तक मान्य):

भारतीय मौसम विभाग से मिले मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, सुबह और रात के समय मध्यम से घने कोहरे और शीतलहर के लिए चेतावनी जारी की गई है।

मौसम चेतावनियों के कृषि पर संभावित प्रभाव और संबंधित एग्रोमेट सलाह:

किसानों को सूचित किया जाता है कि पाले से बचाव हेतु रबी की खड़ी फसलों हल्की सिंचाई कर उचित नमी बनायें रखें। सरसों, चना , राजमा , मटर आदि फसलों को शीत लहर से बचाव के लिए सल्फ्यूरिक एसिड 0.1 % 1 लीटर की दर से 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सामान्य सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि फसलों को ठण्ड/शीत लहर से बचाने के लिए शाम के समय हल्की सिंचाई बार-बार करें, सुबह के समय खेत से पानी को निकाल दें और शाम के समय फिर से खेत में हल्की सिंचाई करें। सरसों, चना , राजमा , मटर आदि फसलों को शीत लहर से बचाव के लिए सल्फ्यूरिक एसिड 0.1 % 1 लीटर की दर से 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। व्यक्तियों को गर्म कपड़े पहननें और जितना संभव हो सके घर के अन्दर रहने, ठण्डी हवा से बचने के लिए कम से कम यात्रा करें। रात्रि के समय घने कोहरे की स्थिति में अति आवश्यक कार्य की दशा में वाहन चलाये। वाहन चलाते समय फॉग लाइट का प्रयोग करें| घने कोहरे में वाहन चलाते समय सुरक्षित परिवहन हेतु सड़क पर बनी पट्टिकाओं का अनुसरण अवश्य करें|तथा रात के समय जूट के बोरे को पशुओं के ऊपर डाल दें और रात के समय जानवरों को खुले स्थान पर न बांधें।

लघु संदेश सलाहकार:

किसानों को सलाह दी जाती है कि फसलों को ठण्ड/शीत लहर से बचाने के लिए शाम को हल्की, बार-बार सिंचाई करें, सुबह खेत से पानी निकाल दें और शाम को फिर से खेत की सिंचाई करें।

फ़सल विशिष्ट सलाह:

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
गेहूँ	गेहू की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 20-25 दिन बाद तथा ऊसर भूमि में बुवाई के 28-30 दिन बाद (ताजमहल अवस्था) पर और दूसरी सिंचाई 40-45 दिन पर कल्ले निकलते समय हल्की सिंचाई अवश्य करे। गेहूं की फसल में यदि सकरी व चौड़ी पत्ती वाले, दोनों प्रकार के खरपतवार दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फुरान 75% डब्लू पी ३३ ग्राम/हेक्टेयर या मैट्रीब्यूजिन 70 %डब्लू पी 250 ग्राम / हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
सरसों	सरसों की फसल में दूसरी सिचाई बुवाई के 55-65 दिन पर फूल निकलने के पहले करें। वातावरण में लगातार बादल छाए रहने से सरसों की फसल में माहूँ कीट की सम्भावना बढ़ जाती है अतः इसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरिफॉस 20% ई.सी. की 1.0 लीटर/हे० अथवा मोनोक्रोटोफॉस 36% एस.एल. की 500 मिली०/हे० की दर से 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
फील्ड पी	मटर की फसल में नमी की अधिकता कारण पत्तियों , तनों और फलियों पर सफेद चूर्ण की तरह फैले हुए बुकनी रोग की रोकथाम हेतु घूलन शील गंधक 80 % 2 किलोग्राम अथवा ट्राईडेमॉर्फ 80% ई.सी. 50 मिलीलीटर /हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
चना	समय से बोई गई चने की फसल यदि 15-20 सेंटीमीटर की हो गई हो तो फसल की खुटाई करें। चने की फसल में कटुआ (कटवर्म) कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु क्लोरपाइरीफोस 50% ईसी + साइपरमेथ्रिन 5% ईसी 2.0 लीटर/ हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।चना की फसल में निराई - गुड़ाई का कार्य बुवाई से 30-35 दिन के बाद करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
आलू	वातावरण में नमी बढ़ने/बादल छाये रहने और तापक्रम गिरने से आलू की फसल में झुलसा रोग का प्रकोप तेजी से फैलता है, अतः इसके रोकथाम हेतु मैंकोजेब २.० ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे। आलू की फसल में सिचाई का कार्य 12 - 15 दिन के अन्तराल पर आवश्कतानुसार करे। आलू की फसल में कटुआ (कटवर्म) कीट का प्रकोप दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी 2.5 लीटर/ हेक्टेयर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
प्याज	समय से बोई गई सब्जियों की आवश्यकतानुसार निराई व सिचाई का कार्य करें। टमाटर की फसल में पछेती झुलसा और बैक्टीरियल बिल्ट रोग का प्रकोप दिखाई देने पर 10 लीटर पानी में 30 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड और 1 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइलिन का मिश्रण मिलाकर छिड़काव करे। सब्जिओ की फसलों में फल छेदक / पत्ती छेदक कीट का प्रकोप दिखाई दे रहे हो तो इसके नियंत्रण हेतु नीम आयल की १.५ मिली0/लीटर पानी में घोल बनाकर ३-४ छिड़काव ८-१० दिन के अंतराल पर करे। प्याज की नर्सरी में डैम्पिंग आफ (आर्द्र गलन) रोग दिखाई देने की संभावना है इसके रोकथाम हेतु थाइरम 2.5 ग्राम या मैकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। प्याज की संस्तुति प्रजातियॉ- कल्याणपुर लाल गोल, पूसा रतनार, एग्रीफॉउण्ड लाइट रेड , एक्स केलीवर, बरगण्डी, के पी, ओरिएन्ट , रोजी आदि में से किसी एक प्रजाति की नर्सरी डालें तथा तैयार पौध की रोपाई करे।
पपीता	पपीते के पौध की रोपाई का कार्य करें । केले/पपीते के बागो की गुड़ाई-करके तने के चारो तरफ 25-३० सेंटीमीटर ऊंची मिटटी चढ़ा दे स्टेंडिंग करे। आम में पत्ती कटाने वाले कीट की रोकथाम हेतु २% कार्बारिल 1.5 % धूल का बुरकाव करें।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भेंस	मौसम में बदलाव की संभावना को देखते हुए, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने जानवरों को रात के दौरान खुले में न बांधें और रात में खिड़कियों और दरवाजों पर जूट के बोरे के पर्दे लगाएं और दिन के दौरान धूप में पर्दे हटा दें। पशुओ को खुरपका-मुँहपका रोग की रोकथाम के लिए टीका लगवायें। इस रोग से ग्रसित पशुओ के घाव को पोटैशियम परमैगनेट से धोए। गर्भवती भैसों /गायों को ढलान वाले स्थान पर न बांधे। गर्भवती भैसों /गायों को पौष्टिक चारा एवं दाना खिलायें तथा नवजात बच्चे को तीन दिन तक खिस अवश्य पिलायें। पशुओं को हरे और सूखे चारे के साथ पर्याप्त मात्रा में अनाज दें। किलनी/जू के संक्रमण से बचाव हेतु पशुबाड़ों में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जू के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय। प्रजनन संबंधी समस्त रोगों के निराकरण हेतु पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि हरा चारा, भूसा, पशु आहार के अतिरिक्त खनिज लवण अवश्य खिलायें। पशुओ को साफ एवं ताजा पानी दिन में 2 -3 बार अवश्य पिलायें। कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-1962 पर सम्पर्क कर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
मुर्गी	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मुर्गियों को दिन में 15 से 16 घंटे प्रकाश उपलब्ध कराये। मुर्गियों को भोजन में पूरक आहार, विटामिन और ऊर्जा खाद्य सामग्री मिलाएं और साथ ही साथ कैल्शियम सामग्री भी मुर्गियों को दें। चूजों को ठंड से बचाने हेतु पर्याप्त गर्मी की व्यवस्था करें।

मौसम चेतावनियों के संभावित प्रभाव (सामान्य):

भारतीय मौसम विभाग से मिले मौसम पूर्वानुमान के अनुसार, सुबह और रात के समय मध्यम से घने कोहरे और शीतलहर के लिए चेतावनी जारी की गई है।

प्रभाव आधारित सलाह (सामान्य):

किसानों को सूचित किया जाता है कि पाले से बचाव हेतु रबी की खड़ी फसलों हल्की सिंचाई कर उचित नमी बनायें रखें। सरसों, चना , राजमा , मटर आदि फसलों को शीत लहर से बचाव के लिए सल्फ्यूरिक एसिड 0.1 % 1 लीटर की दर से 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।